वसुदेव सुतं देवं कंस चाणूर मर्दनम् श्लोक **Lyrics** संस्कृत में

श्लोक **1**
वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वंदे जगद्गुरुम् ॥ 1 ॥

भावार्थ:
वसुदेव और देवकी के पुत्र, कंस और चाणूर का संहार करने वाले, जगद्गुरु श्रीकृष्ण को प्रणाम।

श्लोक **2**
आतसीपुष्पसंकाशम् हारनूपुरशोभितम्
रत्नकण्कणकेयूरं कृष्णं वंदे जगद्गुरुम् ॥ 2 ॥

भावार्थ:
आतसी पुष्प की तरह सुंदर, हार व नूपुर से अलंकृत श्रीकृष्ण को प्रणाम।

श्लोक **3**
कुटिलालकसंयुक्तं पूर्णचंद्रनिभाननम्
विलसत्कुण्डलधरं कृष्णं वंदे जगद्गुरुम् ॥ 3 ॥

भावार्थ:
घुँघराले केश और पूर्णिमा चाँद जैसे मुख वाले, सुंदर कुण्डल पहनने वाले श्रीकृष्ण को प्रणाम।

श्लोक **4**
मंदारगन्धसंयुक्तं चारुहासं चतुर्भुजम्
बर्हिपिञ्छावचूडाङ्गं कृष्णं वंदे जगद्गुरुम् ॥ 4 ॥

भावार्थ:
मंदार पुष्प की सुगंध से युक्त, मधुर मुस्कान वाले, चतुर्भुज श्रीकृष्ण को प्रणाम।

श्लोक **5**
उत्फुल्लपद्मपत्राक्षं नीलजीमूतसन्निभम्
यादवानां शिरोरत्नं कृष्णं वंदे जगद्गुरुम् ॥ 5 ॥

भावार्थ:
कमल-पत्र जैसे नेत्रों वाले, मेघ के समान श्याम वर्ण श्रीकृष्ण को प्रणाम।

श्लोक **6**
रुक्मिणीकेलिसंयुक्तं पीतांबरसुशोभितम्
अवाप्ततुलसीगन्धं कृष्णं वंदे जगद्गुरुम् ॥ 6 ॥

भावार्थ:
रुक्मिणी के साथ विहार करने वाले, पीतांबर धारण करने वाले श्रीकृष्ण को प्रणाम।

श्लोक **7**
गोपिकानां कुचद्वन्द्व कुंकुमाङ्कितवक्षसम्
श्री निकेतं महेष्वासं कृष्णं वंदे जगद्गुरुम् ॥ 7 ॥

भावार्थ:
गोपिकाओं के प्रेम से सुशोभित, लक्ष्मी निवास श्रीकृष्ण को प्रणाम।

श्लोक **8**
श्रीवत्साङ्कं महोरस्कं वनमालाविराजितम्
शङ्खचक्रधरं देवं कृष्णं वंदे जगद्गुरुम् ॥ 8 ॥

भावार्थ:
श्रीवत्स चिह्न वाले, वनमाला और शंख-चक्र धारण करने वाले श्रीकृष्ण को प्रणाम।

श्लोक **9**
कृष्णाष्टकमिदं पुण्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत्
कोटिजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनष्यति ॥ 9 ॥

भावार्थ:
जो भक्त प्रतिदिन प्रातःकाल इस कृष्णाष्टकम का पाठ करता है, उसके करोड़ों जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं।